R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication:14/05/2012

Do you want to be connected with the World of

Children's Literature?

Then, be a member of the Library-cum-Documentation Centre of National Centre for Children's Literature. (NCCL) of National Book Trust, India , and you will get .....

- Children's books in 44 languages
- Reference and lending facility of children's books
- Online access to database of NCCL Library as well as 2034 DELNET member libraries...
- A monthly bi-lingual children's magazine, desk calendar every year, invitations for meetings, fairs and conferences of NCCL (NBT) absolutely free.....
- Lending facility of children's magazines/journals in 18 languages

For details you may .....

- Visit our website www.nbtindia.org.in/innerPage.aspx?aspxerrorpath =/NCCL.aspx,
- Connect to IP No. 59.177.81.15:8000
- E-mail your querries to nccl@nbtindia.org.in
- Call 011-26707712/26121726 between 10.00 a.m. to 5.00 p.m.on all working days.
- Contact during office hours/ write to Librarian-cum-Documentation Officer

National Centre for Children's Literature
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
Nehru Bhawan, 5, Institutional Area Phase – II
Vasant Kunj, New Delhi – 110 070

Rs. 5/-

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 16, No. 9, May 2012

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 16, No. 9, May 2012 **वर्ष 16, अंक 9, मई 2012**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editor / सहायक संपादक
Dwijendra Kumar
द्विजेन्द्र कुमार

Production / उत्पादन
Deepak Jaiswal
दीपक जैसवाल

Illustration / चित्रांकन
Durgadutt Pandey
दुर्गादत्त पांडे

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typeset at Deft Creations H-44, Second Floor, South Extension Part- 1 , New Delhi-110049
Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd, 203-204, DSIDC Shed, Okhla Ind. Area, Phase-I, New Delhi.

Contents/सूची

जादूगर प्रोफेसर	डॉ. हरिकृष्ण देवसरे	2
Bend in the Tail of Dog	Ruchi Singh	6
अमर हुआ बन कर तारा	सुरेखा पाणंदीकर	8
The Blue Monster	Manoj Das	11
बाबा की नौकरी	सुरेश 'आनन्द'	15
डेज़ी	सरला भाटिया	18
The Nomadic Gaddi..	Dr Neeta Sarkar	23
एक चिड़िया	अखिल शर्मा	25
तीन बाल कविताएं	विक्की आर्य	26
As you Sow, So Shall..	Manas Ranjan Samal	28
Greedy Man	Rajeev Sharma	30
खुद करके देखो	आइवर यूशिएल	32

***Editorial Address* / संपादकीय पता**
National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110 070

E-Mail (ई–मेल) : nbtindia@ndb.vsnl.net.in

Per Copy/ एक प्रति : Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**
Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**
कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।
This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.
यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचो को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

चिट्ठी आई है / Mail Bag

I have gone through April issue of your Bulletin and found it very charming. The Himachal folk stories were great to read and the pictures in Kangra style of painting, a delight to see. Altogether, a fantastic issue. I liked all the stories of the Bulletin.

I hope more such issues are brought out by you.

Awi Raj
Sharda University
Greater Noida
(Uttar Pradesh)

हिमाचल प्रदेश की पृष्ठभूमि पर तैयार यह अंक बहुत ही सराहनीय है। कई कारणों से हम हिमाचल प्रदेश जैसे खास राज्यों से अनजान रहते हैं। पाठक मंच बुलेटिन के इस अंक में हिमाचल की लोक कथाओं के साथ कांगड़ा चित्रकला के तर्ज पर बच्चों द्वारा तैयार किए गए चित्रांकन बहुत ही मनमोहक हैं। इतना ही नहीं पाठक मंच बुलेटिन के इस अंक में हमें हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति के बारे में जानने को भी मिला।

हम आशा करते हैं कि पाठक मंच बुलेटिन ऐसे प्रयास अक्सर करता रहेगा।

रमाकांत सिंह
गौतम नगर, नई दिल्ली

हिमाचल प्रदेश के ऊना के पोलिया पुरोहितां के बच्चों की रचनात्मकता से सुसज्जित पाठक मंच बुलेटिन, अप्रैल 2012 अंक पढ़ा ।

मनोरंजक लोककथाओं से सुसज्जित इस अंक में प्रकाशित कहानी 'पांच चीनी भाई' का कथावस्तु राष्ट्रीय जीवन के लिए शिक्षाप्रद है ।

अपनी मां से समान रूप से प्यार करने वाले, अलग–अलग खासियत से परिपूर्ण पांचों भाईयों ने अपनी आपसी एकता से सफलता प्राप्त की।

यदि हम भी आपसी एकता को प्राथमिकता दें, तो हमारे राष्ट्र को हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

चिन्मय दत्ता
दर्शन मेला म्यूजियम, इंडिया
चाईबासा (झारखंड)

पाठक मंच बुलेटिन पत्रिका का मार्च 2012 का अंक प्राप्त हुआ । इस अंक की सभी कहानी, कविताएं खूब पंसद आई । आपसे एक गुजारिश है कि पत्रिका में पाठकों के पत्र भी प्रकाशित कीजिए । हम रचनाएं जब–जब भेजते है, तब–तब वापस कर दी जाती हैं । क्या बड़े बाल साहित्यकारों के आगे हम छोटे साहित्यकारों की कोई अहमियत नहीं रह गई है? हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी रचनाओं को भी स्थान देकर हमारा मान–सम्मान बढ़ाईए। मैं पत्रिका को पढ़ने के बाद बच्चों को पढ़ने के लिए देता हूं ।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
अध्यक्ष–स्वर्गीय मीनू रेडियो श्रोता क्लब
गल्लामंडी–गोलाबाजार 273480
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

जादूगर

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

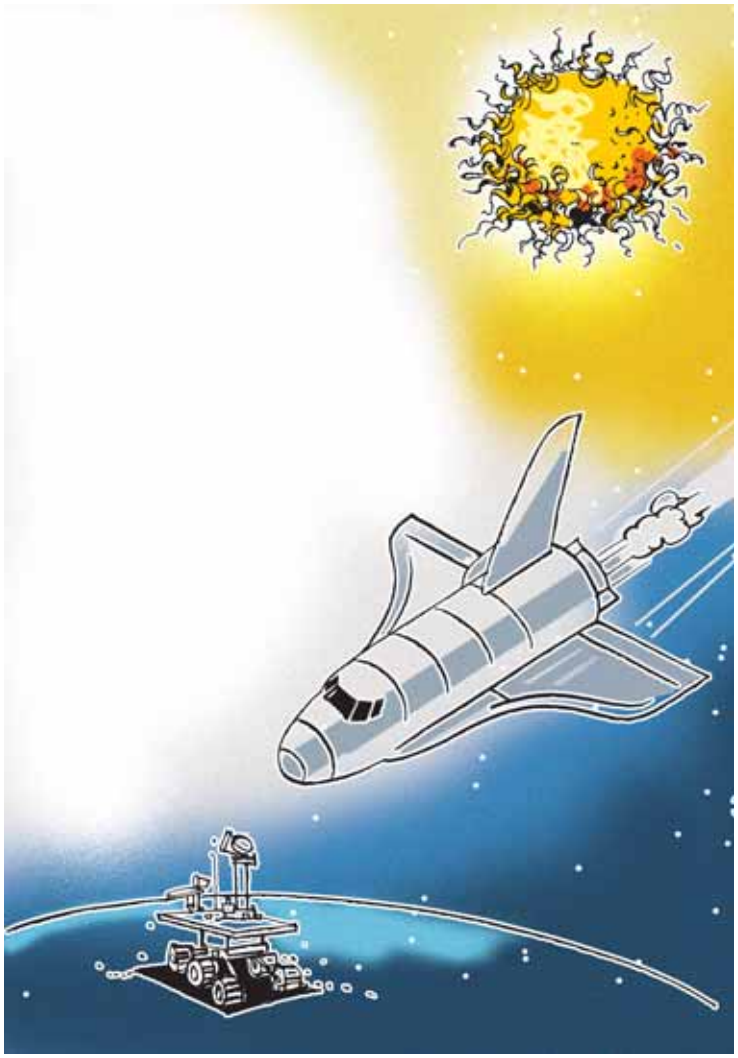

अभी तक आपने पढ़ा कि बच्चे प्रोफेसर अंकल के यान में बैठकर अंतरिक्ष की ओर चल दिए। आगे जानने के लिए यह अंक पढ़ें।

पांचों बच्चे यान की दूरबीनों से सूर्य को देखने लगे। दूरबीनों से सूर्य एकदम समीप दिखने लगा। उसमें होने वाले भयानक विस्फोटों को देखकर विक्की ने घबराकर कहा– "अंकल! ये विस्फोट कहीं हमारे यान को नुकसान न पहुंचाएं।"

"नहीं। ऐसा कुछ नहीं होगा। हम उससे बहुत दूर हैं।"

"पर ये विस्फोट क्यों हो रहे हैं?" शशि ने जिज्ञासा प्रकट की।

"ये गैसों के जलने से होते हैं। दरअसल सूर्य में जलने वाली गैसों के भंडार हैं। उन्हीं गैंसों के भंवर और विस्फोट तुम देख रहे हो।"

"अंकल, लगता है सूर्य में चारों ओर आग का समुद्र है।" संजय ने कहा।

"संजय, सचमुच यह देखने में आग के समुद्र जैसा ही लगता है और यह सही भी

है। सूर्य, पृथ्वी जैसा ठोस नहीं है। यह तो कई तरह की गैसों का पिंड है। जलने वाली इन गैसों की लहरें–सी उठती रहती है। उन्हें देख कर लगता है कि जैसे ये आग का समुद्र हो।''

''अंकल, अगर सूर्य न होता, तो क्या होता?'' संजय ने पूछा।

''तो पृथ्वी पर हमारा जीना असंभव होता। तुम्हें मालूम है कि सूर्य के प्रकाश से ही पौधे उगते हैं। सूर्य की रोशनी से हमारे शरीर का विकास होता है। अगर किसी पौधे या आदमी को लंबे समय तक अंधेरे में रखो तो देखोगे कि वह पीला पड़ जाएगा। पौधा तो जल्दी सूख भी जाएगा, आदमी भी कुछ समय बाद मर जाएगा।''

''ओह'' सूर्य के प्रकाश में इतनी शक्ति है?'' विक्की ने दूरबीन से सूर्य को देखते हुए कहा।

''हां! तभी तो लोग आजकल सौर–ऊर्जा की शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। जब अंतरिक्ष में स्टेशन बन जाएगा तो सूर्य का उपयोग और बढ़ जाएगा। तब वे स्टेशन से सौर–ऊर्जा इकट्ठा करेंगे और पृथ्वी पर भेजेंगे।''

अचानक यान का संतुलन बिगड़ने लगा। बच्चे चीख उठे– ''अंकल, यान को क्या हो गया? इसे संभालिए।''

''घबराओ नहीं, हमें ऐसे अवसर पर अपने को संभालकर रखना चाहिए।''

और प्रोफेसर ने कन्ट्रोल पैनल पर अपना पूरा ध्यान लगा दिया। वह हिल रहा था। बच्चे चुपचाप देख रहे थे और प्रोफेसर अंकल बार–बार यान के नियंत्रण कक्ष में लगे मीटर की ओर देख रहे थे। उनके माथे पर पसीने की बूंदें झलक रही थीं।

''अंकल? क्या बहुत परेशानी वाली बात है?'' थोड़ा साहस करके राजू ने पूछा।

''हां'' और वह फिर से मीटरों को देखकर कुछ सोचने लगे।

''कहीं हम सूर्य की ओर तो नहीं बढ़ रहे हैं? गर्मी बढ़ने से ऐसा हो रहा हो।'' डब्बू ने कहा।

''नहीं, वह तो मैंने पहले ही ठीक कर लिया था। हम उस परिधि से काफी बाहर आ चुके हैं। पर यान को हम अपनी मनचाही दिशा में नहीं ले जा पा रहे हैं?''

''तो क्या हम अंतरिक्ष में ही भटकते रहेंगे?'' राजू ने कहा।

''फिलहाल तो ऐसा ही लगता है। शायद हम अंतरिक्ष के किसी ऐसे भाग में हैं जहां दो ग्रहों के बीच का गुरुत्वाकर्षण शून्य होता है।''

''तब तो बड़ी मुसीबत में फंस गए हम लोग? पर हम यहां पहुंचे कैसे अंकल?'' शशि ने पूछा।

''यही तो मैं नहीं समझ पा रहा हूं।'' यान को नियंत्रित करने का प्रयास करते हुए प्रोफेसर ने कहा।

सब बच्चे एकदम चुप हो गए। वे भला इस अवसर पर क्या करते? उन्हें लगा कि अगर प्रोफेसर अंकल कुछ न कर पाए तो समझो, इसी यान पर वे सब घुट–घुटकर मर जाएंगे। वे शायद घबराहट से रोना–चीखना शुरू कर देते कि तभी प्रोफेसर ने कहा–

''हमारा यान किसी अज्ञात शक्ति द्वारा खींचा जा रहा है। हम उसी की ओर खिंच रहे हैं। लगता है यह सारी गड़बड़ी उसी शक्ति के कारण हुई है। हमें किसी शक्ति ने पूरी तरह से नियंत्रण में ले लिया है।''

''यह तो नई विपत्ति आ गई।'' विक्की ने कहा।

''वह शक्ति भला क्या हो सकती है अंकल?'' राजू ने कहा।

''वह शक्ति किसी लड़ाकू अंतरिक्ष यान की हो सकती है, किसी ग्रह की भी हो सकती है। जो भी हो, हमें किसी भयानक खतरे का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए।''

''भयानक खतरे'' का नाम सुनते ही एक क्षण के लिए बच्चों के चेहरे उदास हो गए। उन्हें लगा कि वे बेकार ही इस विपत्ति में फंस गए। उन्हें अपने घर और मम्मी–पापा की याद आने लगी। लेकिन उस समय इस तरह की बातों से कुछ नहीं होने वाला था। अच्छा तो यही था कि जो भी सामने आए, उसका मुकाबला बहादुरी से किया जाए।

अचानक यान के संकेत कक्ष में रंगीन बल्ब जलने लगा और ''पिप पिप'' की ध्वनि के साथ कुछ संकेत आने लगे।

''तो हम उस शक्ति के पास पहुंच रहे हैं जो हमें अपनी ओर खींच रही है।'' प्रोफेसर अंकल ने कहा।

''पर ये संकेत?'' राजू ने इशारा किया।

''इनका उत्तर मैं अभी भेजता हूं।''

और प्रोफेसर ने उन संकेतों के उत्तर भेजने शुरू कर दिए।

संकेत यह आ रहे थे– ''आप अपने बारे में बताइए कि आप कौन हैं?, कहां से आए हैं?, इस क्षेत्र में आने का आपका उद्देश्य क्या है?, आप शत्रु हैं या मित्र?''

संकेतों की वैज्ञानिक–भाषा में प्रोफेसर ने उत्तर दिया। कुछ ही देर में वे बोले– ''ये संकेत किसी ग्रह के हैं। कुछ ही क्षणों में स्पष्ट हो जाएगा कि वह ग्रह कौन–सा है?''

''यानी हम किसी दूसरे ग्रह पर उतरने वाले हैं?''

''हां, अभी तो ऐसा ही लगता है।''

अब बच्चों के मन में जहां नया ग्रह को देखने की प्रसन्नता थी, वहीं इस बात की आशंका भी थी कि कहीं वे किसी नई विपत्ति में न फंस जाएं। उस ग्रह में यदि हमें कैद कर लिया गया तो क्या होगा?'' वे एक बार फिर भयानक और डरावनी बातें सोचकर चिंतित हो उठे।

''हम मंगल ग्रह की ओर जा रहे हैं। वह देखो सामने रहा मंगल ग्रह। हमारा यान उधर ही जा रहा है।'' प्रोफेसर ने कहा।

बच्चों ने उत्सुकता में मंगल ग्रह को देखा। लाल रंग का चमकता हुआ वह ग्रह उनके मन में तरह–तरह के प्रश्न जगाने लगा। लेकिन दूसरे ही क्षण तरह–तरह की आशंकाएं भी उठने लगीं।

उनका यान ज्यों–ज्यों मंगल ग्रह के निकट पहुंच रहा था, उतने ही अधिक संकेत आ रहे थे। प्रोफेसर अंकल उन संकेतों का उत्तर देने के साथ–साथ यान को पूरी तरह से नियंत्रित करने में व्यस्त थे। उनके हाव–भाव और काम करने के ढंग से स्पष्ट था कि वे यान को मंगल ग्रह पर उतारने की तैयारी कर रहे हैं। उन्हें शायद इस बारे में निर्देश भी आ रहे थे।

प्रोफेसर अंकल जिस गंभीरता से उस समय काम कर रहे थे, उसे देखकर किसी बच्चे में यह साहस नहीं रहा था कि वह कुछ पूछे। उन्होंने अब अपने आपको पूरी तरह तैयार कर लिया था कि मंगल ग्रह पर यदि कोई परेशानी आती है तो वे उसका मुकाबला करेंगे, फिर हो सकता है, वे लोग मित्रतापूर्ण व्यवहार करें, इसलिए अब चुपचाप वहां चलना ही ठीक होगा– इसके अतिरिक्त कोई चारा भी तो न था।

(मंगल ग्रह पहुंचने पर यान के साथ क्या होता है? क्या मंगल ग्रह के लोग प्रोफेसर और बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे? पढ़िए अगले अंक में)

102, ब्रज विहार, पो. चंद्रनगर
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

Bend in the Tail of Dog

Ruchi Singh

Once upon a time, in the state of Malta in Nepal a cobbler lived in the village Salyan. He was very lazy. He thought, by fortune if I get a magical lamp and I am able to bring out a Gini by rubbing it, I would ask the Gini to do all the work and I would be sleeping in leisure.

Very near to the hut of the cobbler there was a big building wherein lived a magician. The magician used to do all his works through magic. The cobbler knew this. One day he reached to the magician. The cobbler Jhankhe told the magician, "You are my neighbour, please

give me a lamp so that I can bring a Gini out of it and thus become a prosperous man." The magician told him that he could give him a Gini but he would not be able to handle it. "Actually the Gini will obey you only if you are having ample work…" The cobbler requested him, "You don't worry about this. Please give me Gini. I will give him so much of work that he will always be fed up with work."

The magician gave a lamp to the cobbler and told him that the Gini was inside it. The cobbler came home with the lamp and rubbed the lamp to bring out the Gini; the Gini came out. The cobbler began to give him work; first of all he told him to build a beautiful home in place of the hut, and then asked Gini to bring beautiful clothes for him; to fix a beautiful bed so that he can sleep upon it comfortably, provide ornaments studded with diamonds and pearls, several servants and best food. He dared the Gini to cut the jungle and grow a beautiful garden in its place. The cobbler asked for magic carpets and toured whole of world on it and came back home.

He demanded the Gini to arrange for elephants and horses. Now the cobbler was the happiest man on the planet earth.

The Gini asked for more work and the cobbler asked him to produce a beautiful girl as his wife.

The Gini arranged the same and the cobbler married the girl.

Now the cobbler was worried what work may be given to the Gini. He prayed to Lord about his problem and all of a sudden he found a solution. He asked the Gini to straight the bended tail of the dog sitting beside him. The Gini did it once but again it bended. He tried it several times. Ultimately the Gini conceded defeat but the cobbler did not leave him and till today the Gini is trying to straight the bended tail of the dog.

Janakpuri, New Delhi

अमर हुआ बन कर तारा

सुरेखा पाणंदीकर

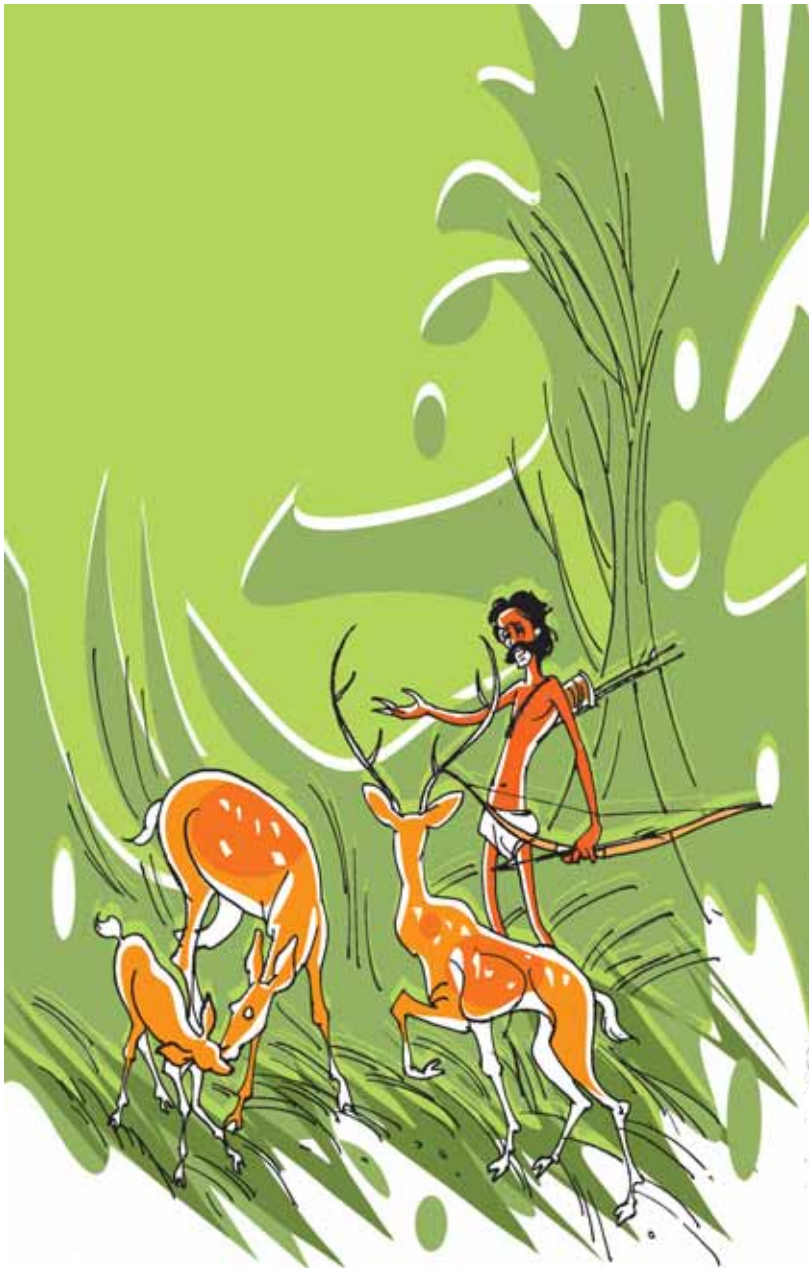

शिवपुरी के गांव में घोलू रहता था। वह एक प्रवीण निशानेबाज था। उसके जैसा शिकारी पूरे इलाके में नहीं था। वैसे तो घोलू और उसकी पत्नी अपने छोटे से खेत में मेहनत करके और घोलू द्वारा मारे हुए जानवरों तथा पक्षियों से अपना और अपने दो बच्चों का अच्छी तरह से गुजारा कर सकते थे। पर खेतों से मिले अनाज और सब्जियों में से आधा साहूकार ले जाता था। पहले कभी घोलू के पिता ने साहूकार से कर्जा लिया था उसी का हवाला देकर साहूकार घोलू की कमाई हड़प कर ले जाता था। वह अधिक से अधिक पंछी और

जानवर मारकर, उनका मांस और खाल बेचकर कर्ज उतारना चाहता था।

रोज की तरह उस दिन यानि सोमवार की देर शाम घोलू शिवपूरी के पास के जंगल में वहां पहुंचा जहां बहुत मृग या हिरणों के झुंड रहते थे। ''दो तीन हिरण मिले तो काफी धन मिलेगा। हिरण के मांस, खाल ही नहीं बल्कि सिंग भी अच्छे दामों पर बेचूंगा।'' सोचकर घोलू ने इधर–उधर देखकर एक पेड़ चुना। झील के पास होने से पानी पीकर जानवर वहीं से गुजरते थे। घोलू पेड़ पर चढ़ा। अपने तीर कमान साथ रखे।

थोड़ी देर में उसने देखा कि एक मोटा सा हिरण आ रहा है। ''वाह आज भाग्य सही लगता है'' उसने तीर साधा। ''मुझे मत मारो ए व्याघ (शिकारी)। मैं गर्भवती हूँ। मुझे मारोगे तो मेरा बच्चा भी मर जाएगा।'' हिरणी बोली। घोलू आश्चर्यचकित हुआ। पर फिर संभल कर बोला– '' तुम्हे नहीं मारूंगा तो मेरे बच्चे भूखे रहेंगे। सुबह से मुझे कोई शिकार नहीं मिला है।''

''ठीक है। मेरा बच्चा जन्म लेने वाला है। मैं उसको जन्म देकर सुबह से पहले वापस आऊँगी। फिर तुम मुझे मारना।'' हिरणी ने कहा। ''तुम्हारा क्या भरोसा?'' घोलू ने पूछा।

''मैं माँ बनने वाली हूँ। माँ कभी झूठ नहीं बोलती। यह मानते हो ना।''

घोलू को अपनी माँ याद आई। उसने तीर नीचे रखकर कहा– ''अच्छा जाओ।''

कुछ ही देर हुई थी कि एक और जानवर आया। वह धनुष पर तीर चढ़ा कर तैयार हो गया। घोलू ने देखा कि वह एक सुन्दर बारह सिंगों वाला हिरण था। घोलू को देखकर वह बोला– ''रुक जाओ शिकारी। मैं अपनी पत्नी से मिलने जा रहा हूँ। पिछले तीन–चार दिन से हम मिले नहीं हैं। वह परेशान होगी। तुम्हारी अपनी पत्नी भी तुम्हारे लिए बेचैन होती होगी। मैं वचन देता हूँ कि पत्नी से मिलकर सुबह से पहले आ जाऊँगा। फिर तुम मुझे मारना।'' हिरण ने वादा किया। ''जब हिरणी को छोड़ा तो इसे भी छोड़ता हूँ। दोनों में से कोई तो आएगा।'' सोचकर शिकारी ने कहा– ''जाओ पर आना जरूर।'' ''जब वचन दिया है तो निभाऊँगा। विश्वास रखो।'' हिरण ने कहा।

रात काफी हो चली थी। घोलू को झपकियाँ आने लगी थी। जागते रहने के लिए वह पेड़ के पत्ते तोड़–तोड़ कर नीचे फेंकने लगा। पर फिर भी उसकी आंख लग गई। एकदम से कसी आवाज से वह जागा। पास ही झील पर कोई जानवर पानी पी रहा था। अंधेरे में दिखाई नहीं दे रहा था। तभी हिरणी पानी पीकर उसी पेड़ की तरफ आई। उसने तीर उठाया ही था कि हिरणी बोली– ''ए शिकारी मुझे मत मारो। मेरा बच्चा खो गया है। उसको ढूंढते

मैं इधर आई हूँ। उसके मिलते ही मैं वापस आ जाऊँगी। थोड़ी देर की बात है। वह पानी पीने यहां जरूर आएगा। उसको मिलकर मैं आ जाऊँगी।'' इससे पहले कि घोलू कुछ कहता हिरणी तेजी से भाग गई। ''लगता है आज भाग्य में शिकार है ही नहीं। दिन उगते ही खाली हाथ लौटना पड़ेगा।'' घोलू अपने भाग्य को कोसता रहा।

थोड़े ही देर में उसे पेड़ के नीचे आवाज सुनाई दी। उसने देखा दो हिरणियाँ, एक बारह सिंगवाला हिरण और एक हिरण का बच्चा नीचे खड़ा है। पहले आई हिरणी बोली–''ए शिकारी मैं आ गई हूँ अपने बच्चे को जन्म देकर। अब तुम मुझे मारो।'' ''नहीं–नहीं इसे मत मारो। इसका बच्चा अभी छोटा है। उसको माँ की जरूरत है। यह मेरा बच्चा बड़ा है। मुझे मारो।'' आखिर में आई हिरणी बोली। ''नहीं नहीं ए शिकारी तुम मुझे मारो। माँ के बिना, मै नहीं रह सकता। माँ को और भी बच्चा हो सकता है, पर मेरी माँ मर गई तो माँ कहां से मिलेगी।'' हिरणी के साथ आया बच्चा बोला। ''अरे वाह मेरे जैसे मर्द के होते हुए मादा या बच्चा कैसे मर सकता है'' व्याघ सोचो तुम मर्द हो। मुझे ही मारो।'' बारह सिंगा बोला।

''नहीं नहीं इन दोनों ने अभी जिदंगी देखी भी नहीं है। अभी कोई बच्चा भी नहीं हुआ है। मुझे मारो यही सही रहेगा।'' पहली हिरणी बोली।

''नहीं'', बच्चे के साथ आई हिरणी बोले जा रही थी।

''नहीं मुझे'', ''नहीं नहीं मुझे'', हिरणियाँ और बच्चे चिल्लाने लगे।

घोलू को अपने पर शर्म आई। जानवर होकर भी उन्होंने अपना वचन निभाया और मरने के लिए वापस आए। इतना ही नहीं, दूसरे को बचाने के लिए अपनी जान का बलिदान देने के लिए लड़ रहे हैं। और मैं? मनुष्य होकर जानें ले रहा हूँ। पंछियों और जानवरों को मार रहा हूँ। धिक्कार है मुझ पर।

''नहीं, मैं तुममें से किसी को नहीं मारूंगा। तुम सब अपने घर जाओ। निडर होकर जंगल में रहो। आज से मैं कभी किसी को नहीं मारूंगा। शिकार करना छोड़ दूंगा। कोई और काम करके कमाई करूंगा।''

अहिंसा की हिंसा पर विजय हुई।

उसका निर्णय सुनकर देवता प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे वर दिया– ए शिकारी तुम नक्षत्र–तारे के रूप में अमर हो जाओगे। तुम्हारे साथ वह चारों मृग और मृगनियाँ भी और लोग उसे व्याघ नक्षत्र कहेंगे।

आज भी हम आकाश में आठ तारों का समूह देखते हैं जिसमें चार कोनों में हैं दो हिरणियाँ, हिरण और बच्चा। तीन तारे हैं बाण के रूप में व्याघ।

डब्ल्यू–2, ग्रीन पार्क
नई दिल्ली– 110016

The Blue Monster

Manoj Das

A lush forest on their river Ganga, was the home of a large pack of foxes. The forest offered varieties of fruits as well as edible, smaller creatures to keep its fox population jolly and busy. But Chandarava, a new-fangled young fox, had developed a great fancy for domestic fowls. Every now and then, he would sneak into the nearby village in search of his favourite food.

His friends warned him several times, saying, "Don't be too adventurous. There is plenty for us in the forest. Haven't our wise forefathers said that an empty stomach was preferable to a well-fed-back with blows?"

"My back is foxy enough to give the slip to the smartest of sticks," Chandarava bragged about, and he

derided his well-wishers for their chicken-heartedness.

The village washer man had a brood of excellent fowls and for a long time. Chandarva kept a greedy eye on them. One evening, determined to grab one of them before they had been led into their roost, he watched carefully from his lookout in a bush. What he did not know was that the washer man too had kept an equally alert vigil on his brood. Chandarava was about to achieve his end when the washer man spied him prowling around and gave him a furious chase. Chandarava ran for his life and in great panic, jumped into the washer man's vat, full to the brim with indigo dye.

He managed to drag himself out after some struggle, but when his eyes fell on his own limbs, he felt that it would be better for him to die than to move about dyed in pure blue!

He hid in a bush for the night. When it was dawn, he climbed a rock in order to see if there was a ditch nearby where he could live without being seen by his fellow-creatures, till he had hit upon a way to reasonably comfortable death.

Just then an elephant was passing by. He goggled in amazement at the sight of a strange creature standing on the rock, all blue, glittering in golden sunlight.

"Wonderful things have begun to happen in our forest," he mumbled as he ran to inform the other patricians of the forest- the tigers and the lions- about his exciting discovery.

The elephant's flight amused that blue fox tremendously. He waited to see what would happen next.

Very soon all the leading animals gathered at the foot of the rock and their leader, an aged lion, asked with profound humility, "O queer blue being, who art thou and where from doest thou

come? Our forefathers knew a lot. They even exchanged ideas with the elite of several faraway forests. But all the knowledge they have left for us tells nothing about existence of a creature like thee. Thou alone can enlighten us about thyself."

Chandarava immediately grasped the situation. He did not fail to see the great promise that lay hidden in that moment. He assumed an awful look and fixed his gaze on the audience below and said, "How do you expect your forefathers to have known anything about me? Do you take me to be one belonging to this wretched little world of yours? Don't you see I have just descended from the blue?"

"Indeed, we can see that, for none of the animals ever saw you enter our forest from outside. Now, will you kindly state the purpose of your gracious visit?" asked the lion.

"To lord over you, of course!" announced Chandarava. "God in his infinite wisdom asked me to take charge of the forest, to set things right here. Henceforth, it will be your scared duty to look upon me- King Kukudrama- as your master, and to obey me.

"We will, O blessed King Kukudrama," said the animals in a chorus as they bowed to the fox. And the fox broadcast his first order immediately: "Listen you lion, tigers and elephants, I wish to see this forest as an ideal home for only the noble and large animals like you. The inferior and undignified beasts have no place here. To begin with, I want you to drive away all the foxes from this forest. Hurry up, I want the operation to be over before sunset."

The big animals combed the whole forest, and drove all the foxes to the

other side of the river. Some of the young foxes and a few vixen who could not swim against the current were drowned. Chandarava saw the entire operation from the top of a hillock. He heaved a sigh of relief, now that there was no fox left on this side of the forest able to identify him.

The exiled foxes huddled together on the other side of the forest. Why should a god-sent king turn hostile only towards them? Who was the little blue monster? They stood perplexed.

The sun went down and the horizon looked red. As was their custom, the foxes raised a collective howl to mark the end of the day.

Chandarava was enjoying an evening walk on the opposite bank, followed by a train of lions and tigers he had appointed as ministers and courtiers. But no sooner had he heard the howl, he forgot all about his lofty position and, looking upward, gave out a lusty howl himself.

The lions and tigers, stood stunned but only for a moment. Next they woke up to the great deception that had been played upon them. Their blood boiling with rage, they advanced towards Chandarava. Sensing danger, Chandarava tried to run away. But it was a vain bid. He was seized upon and torn to pieces. His blueness was found to be not even skin deep.

Before midnight the harassed foxes were informed about the end of the blue monster's brief rule and were back in their good old forest. The big animals, out of shame, did not show their faces to them for a very long time.

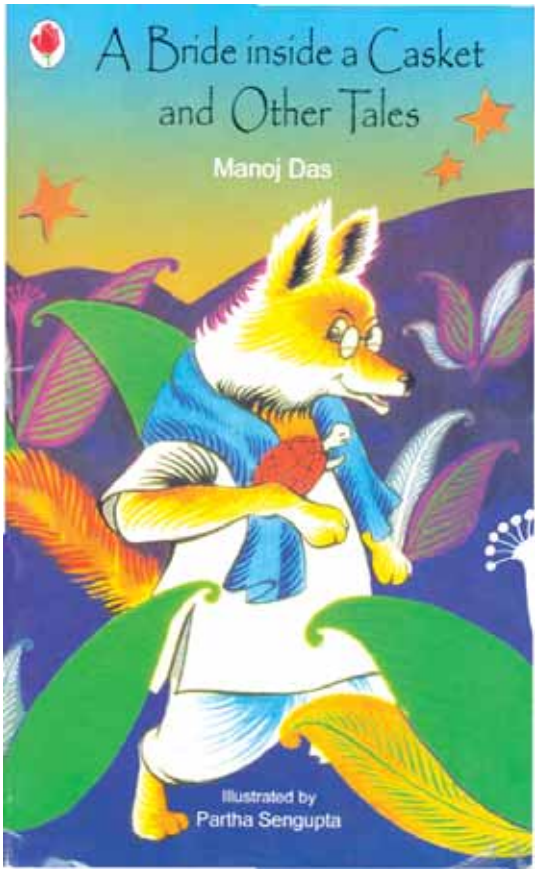

(From NBT Book, *A Bride inside the Casket and Other Tales*)

बाबा की नौकरी

सुरेश 'आनन्द'

बाबा अपनी पोती का हाथ पकड़कर सुबह–शाम शहर के बगीचे में घूमने निकल जाते। रास्ते भर किस्से कहानियाँ सुनते सुनाते रहते और करते भी क्या? पोती की उम्र अब सात बरस की हो गई है। पढ़ने भी जाती है। दूसरी कक्षा भी अब पास कर लेगी।

एक दिन पोती बाबा से पूछने लगी। "बाबा! आपकी उम्र कितनी हो गई है?" बाबा मुस्कुराकर बोले– बिटिया? मेरी उम्र अब सत्तर वर्ष की हो गई है। जब तुम्हारी उम्र का था खूब दौड़ता भागता था। सुबह दूध पीता था। मेरी मौसी जब भी आती थी खूब बादाम, पिस्ते, किशमिश आदि लाती

थी। वह जमाना ही ऐसा था। मेरी माँ मेरी जेब में भर देती थी। घूमते फिरते खा जाता था।

एक दिन पोती बोली– ''बाबा, उन दिनों आप घर में क्या करते थे? बाबा ने बताया– जब मैं तुम्हारे बराबर का था, तब तो मैं भी पढ़ने जाता था। फिर जब बीस वर्ष का हुआ, तब नौकरी करने लगा था। जब नौकरी लगी थी तो मुझे सरकार ने उज्जैन से सारंगपुर जाने का हुक्म दिया था। सारंगपुर नौकरी लगी थी। पहले तो मेरी माँ मायूस हो गई थी कि बेटा कैसे इतनी दूर जाएगा?

फिर हिम्मत कर माँ ने मेरा संदूक जमाया। मेरे कपड़े रखे। होलडोल में चादर, तकिया, दरी आदि रखकर बिस्तर बाँधा था। एक बाल्टी लोटा भी दिया। यूं सन्दूक, बिस्तर, लोटा–बाल्टी लेकर मेरी माँ ने उज्जैन से सारंगपुर के लिए नौकरी पर रवाना कर दिया।

उन दिनों उज्जैन में देवासगेट पर ही तो बस स्टैंड था। मालूम हुआ वहीं से आगरा–मुम्बई मार्ग से सारंगपुर जाना पड़ता है।

सारंगपुर अकोदिया मार्ग पर लोग बताते थे कि इसी सड़क पर ही तो जो अट्टालिका है वहीं की रानी रूपमती थीं। अब तो अट्टालिका जर्जर सी हो गई है। शरीफे के पेड़ अभी भी खड़े हैं। सारंगपुर में बच्चे पेड़ से अभी भी शरीफे तोड़ते रहते हैं। कुछ धंधा करने वाले भी टोकरी में शरीफे तोड़कर बेचते हैं।

सारंगपुर के नागरिकों ने बताया था कि रानी रूपमती सारंगपुर की थी और बाज बहादुर मांडव का बादशाह था। वही उसे सारंगपुर से मांडव ले गया था।

पौत्री कामिनी को ही बाबा बताते हैं – बिटिया, जब मेरी उम्र बीस वर्ष की थी तब मैं नौकरी करने इसी सारंगपुर में ही तो आया था। यहीं नगर पालिका ने कुछ कोठरियां बनाई थी। बाबा इसी में से एक कोठरी में रहा करते थे। एक तरफ सड़क पर नगर पालिका ने नल भी लगा दिया था। यहीं से बाबा पानी भरकर कोठरी में ले जाते थे।

कोठरी में एक तख्त सा बना लिया था। बाबा इसी पर बिस्तर लगा कर सो जाते थे। एक लालटेन भी जला लेते थे। जिससे रोशनी हो जाती थी। फिर बाबा बताते हैं कि आगरा–मुम्बई मार्ग पर ही एक झोपड़ी थी। उसी में एक आदमी ने होटल खोला था। इसी में वह गिलकी की सब्जी व पराठे बनाकर देता था। बाबा उन दिनों यहीं दो रूपए में खाते और इसी में काम चल जाता था।

नगर पालिका की कोठरी के सामने लड़कियों का स्कूल था। लड़कियाँ दिनभर खिलखिलाती रहती थीं। वहीं ठंडी–ठंडी हवाएं भी चलती रहती थी। शाम को बाबा काली सिंध नदी पर घूमने निकल जाते थे। फिर एक दर्जी की दुकान पर बैठे रहते। वहीं सब कविता भी किया करते थे। यूहीं सारंगपुर में मेरी नौकरी में मेरा मन लग गया था। कामिनी बिटिया तुम होती तो तुम्हे भी सारंगपुर की हवाएं कितनी अच्छी लगती।

फिर बाबा ने अपनी पोती कामिनी को बताया– बिटिया! अब तो मेरी उम्र और भी बड़ी हो रही है, अब तो सारंगपुर भी छूट गया है। अब जब भी तुम बड़ी हो तो मांडव जरूर जाना और रानी रूपमती और बाज बहादुर का महल देखना। सारंगपुर भी जाना और रानी रूपमती की जर्जर अट्टालिका जरूर देखना। यहीं तो सड़क किनारे है।

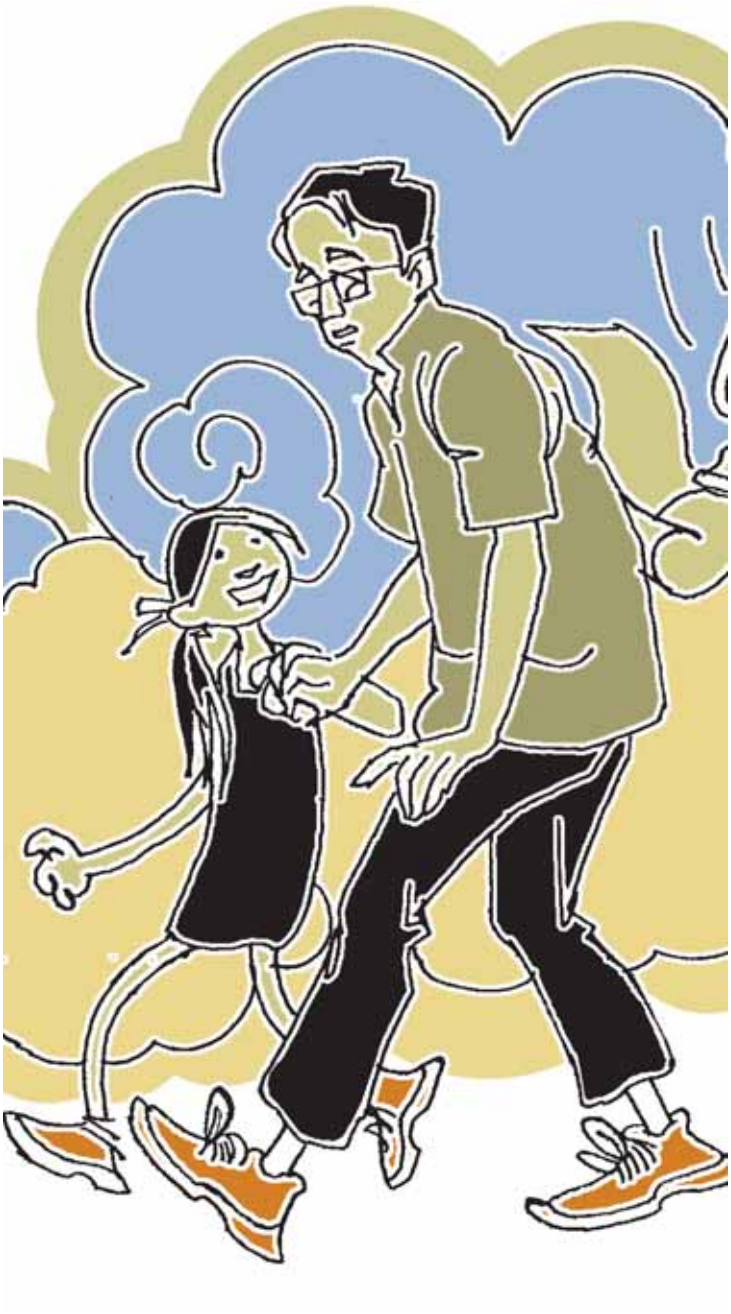

आनन्द परिधि– एल 62
पं. प्रेमनाथ डोगरा नगर
रतलाम (मध्य प्रदेश)

डेज़ी

सरला भाटिया

डेज़ी को सबसे पहले नरेन ही लाया था। जब मैंने उसे देखा तो वह छह माह की हो चुकी थी। एक दिन नरेन के ही घर पर डैडी और मैं गए तो घर का दरवाज़ा खुलते ही हमारे स्वागत में पूँछ हिलाती भागती डैडी के पैरों में लिपट गई।

यह देखकर डैडी ने उसे बहुत प्यार किया। जब वह सोफे पर बैठ गए तो वह उनके पांव के पास ही बैठ गई। उसका यह व्यवहार देखकर नरेन बोला, ''मामाजी यह पैडिगरी डोबरमेन की जाति की है। इसने आपको पहली बार देखा है और आपसे इतना लगाव! देखकर लगता है यह आपको बहुत पसंद करती है।''

उसकी इस बात का भाभीजी ने समर्थन किया और बोलीं, ''असल में मामाजी को

जानवरों से बहुत लगाव रहा है, इस बात को यह बखूबी पहचान गई वर्ना हर किसी मेहमान से यह ऐसा व्यवहार नहीं करती।''

हम लोग उनके घर में कोई डेढ़–दो घंटे बैठे और फिर वापस घर आ गए। घर आने के बाद डैडी ने नरेन से कहा, ''अगर ऐसी ही कोई अच्छी पैडिगरी का पप मिले तो हमें दे देना, हम पैसा देने के लिए तैयार हैं, क्योंकि फार्म की रखवाली के लिए तीन–चार कुत्ते तो चाहिए ही। पिछली बार मैं ऐलसेशन लैसी को ले गया था परन्तु वह बूढ़ी हो गई है। दस वर्ष की होने को आई है। रखवाली तो फिर भी करती है, परन्तु अब वैसी चुस्त नहीं। फार्म बड़ा है तो कुत्ते तो चाहिए ही।''

''मामाजी अगर आप चाहें तो डेज़ी को वहां ले जाइए न! यह तो प्योर–डोबरमेन है, फार्म की खूब देखभाल करेगी।''

इस बात पर मेरे डैडी हैरान रह गए और बोले, No! That is not fair. यह उचित नहीं। तुम्हारे दोनों बच्चे इसे बहुत प्यार करते हैं। This is unjust. मेरे लिए तुम कोई और पप देखना। मैं बच्चों से उनका पप नहीं छीनना चाहता।

उसकी बात को कोई दो माह बीत गए। एक रोज़ क्या देखती हूं कि नरेन डेज़ी को अपने साथ लिए कार में हमारे घर आया है। आते ही डेज़ी हम सबसे उछल–उछलकर प्यार का इज़हार करने लगी। आपसी अभिवादन के पश्चात कुछ विषयों पर बातचीत भी हुई। इस दौरान डेज़ी, फ्लौपी पप के साथ बाहर लॉन में खेलती रही। बातों ही बातों में नरेन बोला, ''मामाजी, दरअसल आज मैं डेज़ी को आपके पास छोड़ने आया हूं। बच्चों को इसलिए साथ नहीं लाया ताकि वे उदास न हों। हमारा फ्लैट दूसरे तले पर है और डेज़ी जैसे डोबरमेन के लिए छोटा पड़ता है। इसे खुली जगह चाहिए। एक दो वर्ष में ही इसका साइज–कद बढ़ जाएगा, तो इसको संभालने में मुश्किल होगी। फार्म पर तो खुली जगह है। यह अन्य जानवरों के साथ रहेगी तो खुश रहेगी। आप इसे फार्म पर ही ले जाइए। मैं बच्चों को समझा दूंगा। फिर अपना तो एक ही घर है, जब दिल करेगा बच्चे वहां जाकर इसे मिल लेंगे।''

डैडी उसकी इस बात पर हैरान रह गए और बेहद प्रसन्न भी हुए। उन्हें तो पली–पलाई डेज़ी मिल गई थी। एक हफ़्ता वह यहां दिल्ली वाले घर में रही। फिर एक दिन डैडी उसे कार में बिठाकर फार्म पर ले गए। चार–पांच महीने बीत गए। हम लोगों का नैनीताल जाने का प्रोग्राम बना। क्योंकि पिताजी फार्म पर ही थे तो सोचा वहीं से उनको साथ लेकर नैनीताल घूम आएंगे। कार द्वारा जाना था, सो फ्लौपी को भी साथ ले लिया, सोचा नैनीताल

जाने से पहले इसे डेज़ी के पास फार्म पर छोड़ जाएंगे।

बड़ा सुहावना मौसम था। दिवाली के पहले दिन हल्की–हल्की सर्दी और हवाओं में खुशनुमा ताज़गी। वह भी तराई की ज़मीन में।हम अपने गांव 'बरा', जो नानकमत्ता रोड पर है, पहुंच गए थे। करीब पांच मिनट बाद हम अपनी ज़मीन की हद यानी पुलिया के पास थे। जैसे ही पुलिया पार की तो डैडी आमों के बाग के पास दूर से ही दिखाई दिए। सफेद कुरता–पाजामा पहने वह नित्य की भांति डेज़ी के साथ फार्म की हदों का चक्कर लगा रहे थे। जैसे ही डेज़ी ने कार का हॉर्न सुना तो वहां से भागकर हमारे पास आ गई। उत्साह और प्रसन्नतापूर्वक भौं–भौं करती। फ्लौपी को देखकर बेहद खुश हुई। इतने में डैडी भी करीब आ गए और तपाक से हमें गले लगा लिया, ''बड़ा अच्छा किया यहां आकर बच्चो! मैं बहुत अकेला महसूस कर रहा था।''

हम कुछ दिन फार्म पर रहे। मैंने नोट किया कि डेज़ी डैडी के साथ बहुत घुल–मिल गई है। रात को भी वह उसे अपने बेडरूम में ही रखते और वह उनकी चारपाई के नीचे दुबक कर सो जाती। छह–सात बजे ही उठकर उनके संग फार्म पर सैर करती। ऐसा लगता था कि यहां की हदों के चप्पे–चप्पे से वह वाकिफ है। फार्म की खूब रखवाली करती। जब भी खेत में काम चलता तो वह वहीं पर खड़ी रहती।

सैर से लौटने के बाद डैडी स्वयं उसे बर्तन में दूध और रोटी डालकर खिलाते। पन्द्रह दिन में एक बार ट्यूबवेल के पास उसे नहलाया जाता। यह तो मैं जानती थी कि मेरे पिताजी का सदा जानवरों से बड़ा लगाव रहा है। उनकी एक पदावली (बुंदेलखंडी) को मैं कभी नहीं भूल पाई, ''गायों की करो आरती, भैंसों का करो श्रृंगार, बैल के पद पूजिए, यह धरती के उठावनहार।''

एक दिन उनके इस कथन पर मैंने हंसकर पूछा, ''डैडी! इस कथन में आपके सभी जानवर, गाय, भैंसे, बैल, बछड़े आदि को स्थान मिल गया परन्तु आपके प्यारे कुत्तों, जैसे सैमी, लैसी, रंगी और डेज़ी का नाम तो कहीं भी नहीं आता।''

वह मेरी इस बात पर ज़ोर से हंस पड़े और बोले ''बिटिया उनकी गाथा तू लिख देना, सारे जानवरों की सेवा होनी चाहिए। जैसे हम इंसानों की करते हैं। सच पूछो तो धरती की उन्नति में इनका प्रमुख स्थान है। ''अब तुम्हीं बताओ क्या हम इनकी सहायता के बिना यह इतना बड़ा फार्म चला सकते है ? डेजी के तो कहने की क्या ! यहां सभी जानवरों से इसका प्रेम है।''

सचमुच मैंने वहां पर रहकर देखा कि फार्म की बिल्लियां, रंगी, डेज़ी और काली बछिया एक साथ ऐसे खेलते हैं कि इंसान के बच्चों को भी मात दे दें। अक्सर पूसीकैट डेज़ी के बरतन में उसके साथ ही दूध पीती। पता नहीं लोग कैसे कहते हैं कि कुत्ते–बिल्ली में जनम–जनम का बैर है। यहां तो मैंने उन सब में मित्रता ही देखी। यहां तक कि जब काले कौवे भी कांव–कांव करते तो सभी जानवर उन्हें उत्सुकता से निहारते। बस डैडी एक बात पर सदा ज़ोर देते। ''जब भी कोई जानवर खरीदो तो उसकी पैडीगरी पर बहुत ज़ोर दो।'' अक्सर कहते, ''नस्ल देखना बहुत जरूरी है।''

चार–पांच वर्ष बीत गए हैं। अचानक मेरे पिताजी का दिल्ली में हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। जून का महीना था। फार्म पर पहुंच कर उनकी याद में खुले पाठ का इंतजाम करवाया। उनके सभी परिचितों और मित्रों को इत्तला कर दी गई। पता नहीं डेज़ी को क्या हो गया। वह उदास रहने लगी। मुझे ऐसा महसूस हुआ वह मेरे पिताजी को ढूंढती रहती है, क्योंकि जब भी हम फार्म पर जाते थे तो वे

हमारे साथ होते थे। इस बार उन्हें साथ न देखकर उसकी बिलौरी आंखे मानों पूछन चाहती हों, ''डैडी कहां है?''

मूकक वेदना से वह इधर–उधर ताकती रहती।

पाठ पर गांव के सभी लोग आए। बरामदे के एक कोने में वह अपनी टांगों में मुख दबाये चुपचाप पाठ को सुनती रही और किसी के नजदीक नहीं आई, न ही किसी को देखकर भौंकी।

गांव के और फार्म के सभी कामगारों और सेवकों ने पंक्तियों में बैठकर खाना खाया, बड़े बूढ़ों ने प्रसाद लिया और अपने मित्र यानी मेरे पिताजी को याद किया।

वह चुपचाप बिना किसी हरकत के सबका आना–जाना देखती रही। जब सब लोग चले गए तो मैंने उसको अपने पास बुलाकर बहुत प्यार किया, ऐसा लगा जैसे उसकी आंखों में आंसू आ गए हों।

हमीद से बरतन में दूध मंगवाया तो उसके दोनों बच्चे ब्लैकी और जैकी भी आ गए। शाम की सैर के बाद जब सब जानवर घर लौटे तो वह काली बछिया के समीप जाकर बैठ गई।

सवेरा हुआ तो हमीद भागा–भागा बरामदे में आया और जाली के दरवाजे के बाहर से ही बोला, ''साहब, आज डेज़ी कहीं भी दिखाई नहीं दे रही है। उसका दूध का बरतन भी वैसा ही रखा है, पता नहीं कहीं चली गई है?''

''ब्लैकी–जैकी कहां पर हैं?''

''वे दोनों तो बाग में बिल्लियों के साथ खेल रहे हैं।''

''जानवरों के बाड़े में जाकर देखो, शायद भूरी (गाय) गइया के पास बैठी हो। उसके साथ भी तो उसकी खासी दोस्ती है।''

''जी, मैंने उसे वहां जाकर भी देख लिया। सब गाय व बैल वहीं पर हैं परन्तु डेज़ी का कहीं पता नहीं।''

सुदर्शन जी, मैं व बच्चे सभी डेज़ी को ढूंढने के लिए बाहर निकले। हर दिशा में उसे आध–एक घंटे तक आवाज़ें लगाते रहे परन्तु उसका कुछ भी पता न चला।

इतनी देर में बबलू और विक्की उसे ढूंढ़ते हुए गन्ने के खेतों के पार निकल गए तो दोनों एक साथ चिल्ला उठे, ''यह डेज़ी को क्या हो गया, यह तो यहां बेहोश पड़ी है।''

हम सबने वहां पहुंच कर देखा। वास्तव में डेज़ी मर गई थी। डोबरमेन डेज़ी, वाकई डैडी ठीक ही कहा करते थे कि एक कुत्ते की असली पहचान उसकी पैडिगरी है, नस्ल है। एक जानवर का इंसान से इतना प्रेम और लगाव हो सकता है। यह मैंने पहली बार देखा, अपने जीवन में।

सी–13, स्वामी नगर साउथ
नई दिल्ली–110017

The Nomadic Gaddi Of Himachal Pradesh

Dr Neeta Sarkar

The Gaddi tribes of Himachal Pradesh lead a nomadic life in their seasonal migration from the higher altitudes of pasture land in winter to the lower Shivalik hills, taking the hill track routes which are known to them. Sometimes, they also migrate to the neighbouring states for pasture grazing.

The ergonomics of the Gaddis is in pasture grazing their flocks of sheep and goats, which can be more than a thousand in number, when they migrate.

Sometimes, most of the Gaddis migrate together for mutual assistance and support, while grazing the flocks in the hills.

The occupation of pasture grazing supports their families and the flocks. They sell sheep wool, sheep and goat to traders in their migratory routes. They are welcomed by the hill farmers after March-April harvest, as the droppings of sheep and goat are natural manure for enriching the fertility of the poor mountain soil.

The male members of the community are the ones, who lead a bohemian life and take the road. They often take more than six months to return to the place where their families reside. They buy corn flour from villagers by selling wool and milk, and prepare meal of corn flat bread (*makai roti*), with fresh goat milk. They, also, hunt small games in the forest. They are very robust and good mountain climbers. They have knowledge and experience about the hill regions, the flora and fauna. They camp in the forest with their flocks secured and guarded by their dogs.

The Gaddi dog is famous in Himachal, and is on high demand among the local villagers. These mastiffs are trained to guard and collect the stray sheep or goats. They are good hunters and can hunt small games for their masters. These dogs have been known to attack the wild leopards. The dogs have spiked collar around their neck to prevent leopard's grip on the dog.

Every Gaddi community is named after the place of their origin. The Bharmori Gaddi, for example, always returns to Bharmor in Kangra district, where they have their families. They stop en-route while travelling with their flocks, from the higher altitude region. They speak a dialect of Kinnauri Himachal language.

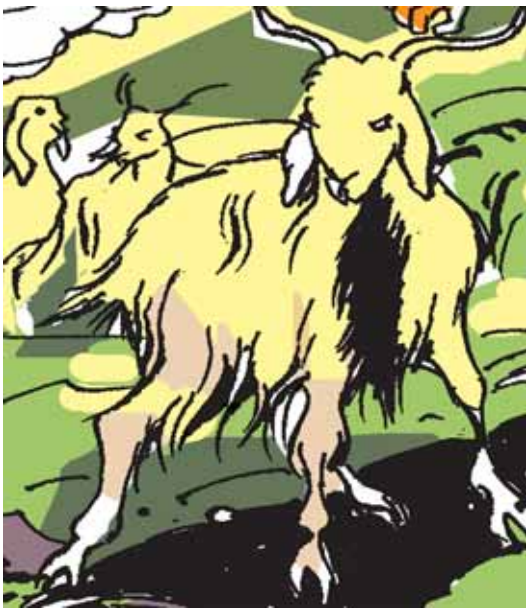

A-91, Ashok Vihar, Phase-II
New Delhi-110052

मेरा पन्ना

एक चिड़िया

अखिल शर्मा

एक चिड़िया थी। वह पेड़ पर रहती थी। उसी पेड़ के पास एक दुष्ट हाथी रहता था। उसका नाम गप्पू था। एक दिन चिड़िया दाना चुगने बाहर गई। गप्पू ने देखा कि चिड़िया अपने घोंसले में नहीं है पर उसके अंडे वहीं पर हैं। दुष्ट गप्पू ने उन अंडों को नष्ट कर दिया।

शाम को जब चिड़िया दाना चुगकर अपने घोंसले में वापस आई तो उसने देखा कि उसके अंडे टूटे हुए हैं। यह देखकर वह बहुत जोर–जोर से रोने लगी। चिड़िया के तीन दोस्त थे। मेंढ़क, मक्खी और बुलबुल। जब उन तीनों को पता चला कि हाथी ने चिड़िया के अंडों को तोड़ दिया है तो उन्हें बहुत बुरा लगा और गुस्सा भी आया। उन तीनों ने हाथी को सजा देने की सोची और योजना बनाई।

मक्खी से कहा गया कि वह हाथी के कान में गुनगुनाएगी जिससे वह बहुत खुश होगा। बुलबुल ने कहा कि वह उसके माथे पर चोंच से प्रहार करेगी जिससे वह पानी के लिए चिल्लाएगा। फिर मेंढ़क ने कहा कि वह एक गड्ढे में से आवाज निकालेगा जिससे हाथी समझेगा की वहां तालाब है और पानी पीने के लिए जाएगा और गड्ढे में गिरकर मर जाएगा।

योजना के अनुसार वैसा ही किया गया और अंत में हाथी मर गया।

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
पोलियां पुरोहितां, ऊना (हिमाचल प्रदेश)

तीन बाल कविताएं

विक्की आर्य

मौसम जादूगर

मुट्ठी में ले मिट्टी को छू
मौसम जादूगर ने दी फूंक
कहा हवा में
गिली–गिली छू
गिली–गिली छू

मिट्टी काली तने हैं भूरे
रंग भला थे कहाँ छुपाये
अब तक तो लगते थे सूखे
कहाँ से नवपल्लव ले आये
रंग लाये, संग सपने लाये
मौसम तेरा गज़ब है जादू

गिली–गिली छू
गिली–गिली छू

भूरे काली, बदरंग मिट्टी
खिली रंगों में पलक झपकते
लाल, गुलाबी, नारंगी, पीले
तरह–तरह के फूल हैं हंसते
झुलसा ना सकी, वो भी इनको
देखो बैरंग लौटी लू!

गिली– गिली छू
गिली– गिली छू।

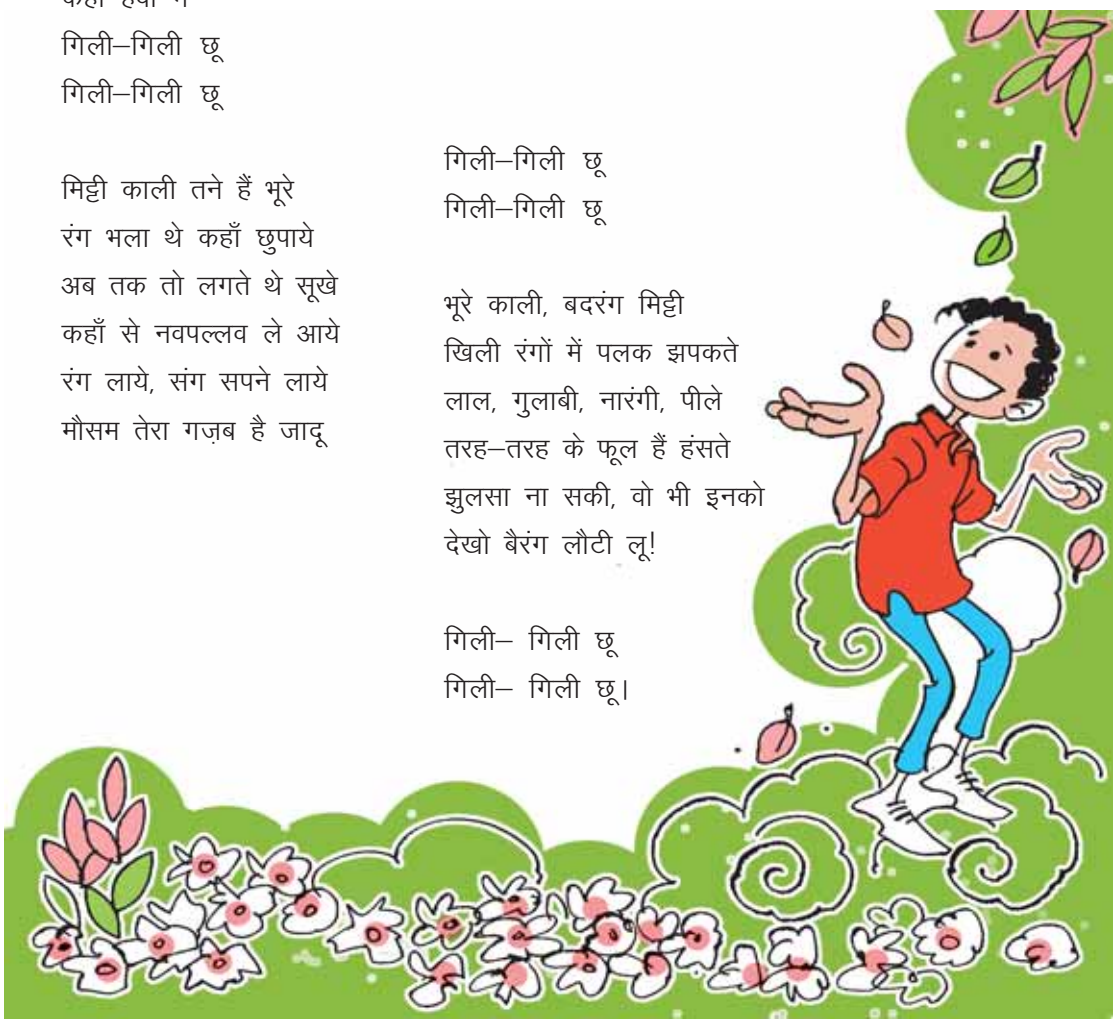

चींटी

तन की होती छोटी चींटी
कितना बोझ उठाती चींटी
खट्टी–मीठी इस दुनिया में
केवल मीठा चुनती चींटी।

कट्टो

लम्बी प्यारी
झबरी दुम पे
कट्टो खूब इतराये
सोचा क्यूँ ना
उस पार भी जा के
ये झंडा फहराये

बीच सड़क पे
कट्टो गिलहरी
आके बड़ी पछताई
आगे पीछे
करे गाड़ी
कहाँ भागे, कहाँ जाये?

खुद सम्भले
कि सम्भाले दुम को
ये भी समझ ना आये।

एस 37/34, डीएलएफ
फ़ेज़– 3, गुड़गांव (हरियाणा)

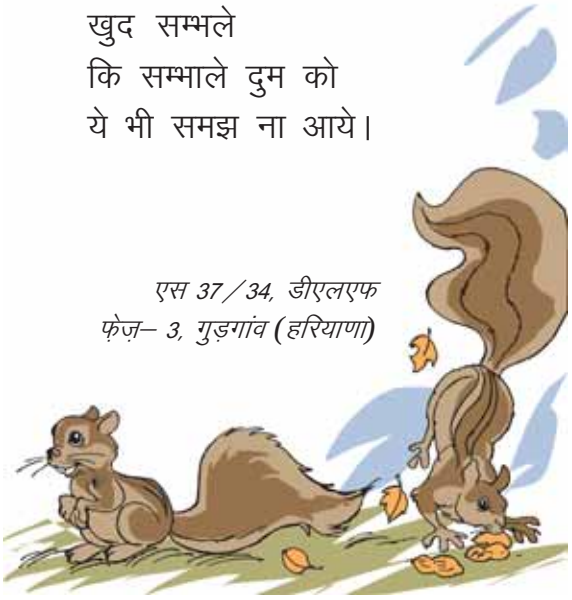

As You Sow, So Shall You Reap

Manas Ranjan Samal

Once, there lived an old man with his old wife. He was very innocent, but his wife was quick-tempered and aggressive noisy in nature. They were after all, poor childless couple. The old woman had a pair of brass bangles as her last asset. She suggested the old man to sell the bangles and start a business, in order to earn something.

The old man went on foot and sold the bangles in the market, and set out for some business purposes. While walking along the lonely path of a forest, he grew worried as it was day break and still, he had to cross a dense forest on the way before reaching his home. But he could not hither-thither, as he was afraid of getting robbed by robbers and thieves.

To his fate, he saw a small hut inside the forest, and presumed it to be of the hermitage of a sage. While reaching near the hermitage, he met the holy man and requested him to let him stay for a night. The sage gave him shelter for the night, and offered him food.

Moved by his kindness, the old man revealed his grief to the sage. The sage, considering his bad times, gave him a magic basket, which would provide him with food as and when desired. The old man had to chant a verse, in times of need as

"Oh! Magic Basket, Magic Basket
We, at your disposal of Carpet
Bless us with a stomach full of edible
So that breath bliss will flow."

In order to experiment the chanting on the way, the old man did it as he was told by the sage and there, appeared sufficient food for him.

On his return journey, he came across a rich man's castle. The rich man was a miser and greedy. When he came to know about the specialty of the magic basket as told by the old man, he decided to entrap the old man to get his magic basket for himself. So, at midnight, when the old man was soundly asleep, the rich man exchanged the magic basket with an ordinary one.

When the old man reached his home and told all his adventure, his wife tried chanting the verse near the basket as told by the old man, but she could not find any specialty of the basket and thus, got annoyed. Now, the old man became sad and felt sorry for his wife.

He again went to the sage and told him everything. The sage came to know the mischief was done by the rich man to the old man, and in order to teach him a lesson, the sage gave another chanting verse to the old man, which was:

"O! golden bird, Oh! silver bird

Bless me once with your wings discard."

And instructed him that as soon as he will chant the verse, the bees will come out and attack, but as soon as he chants;

"O! golden bird, Oh! silver bird

Keep your wings self attached."

Then the bees will settle down inside the wings.

Now, with an intention to teach a lesson to the rich man, the old man took

shelter in his house for a night. He recited the verse and in an instant, the bees came out of no where and attacked the rich man, who did not know how to stop the bees from attacking him. He shouted in pain, and immediately admitted his fault of cheating the old man and begged for apology.

Hearing the noises, the neighbours assembled in front of his house and requested the old man to rescue the rich man from the bees' attack.

The old man saved him only after receiving the magic basket and returned for home. His old wife was happy to see the magic basket which offered food everyday; and they lived happily ever after with the gratitude of the sage of the forest.

OPEPA, Unit-V, Bhubneshwar-751001(Odisha)

Greedy Man

Rajeev Sharma

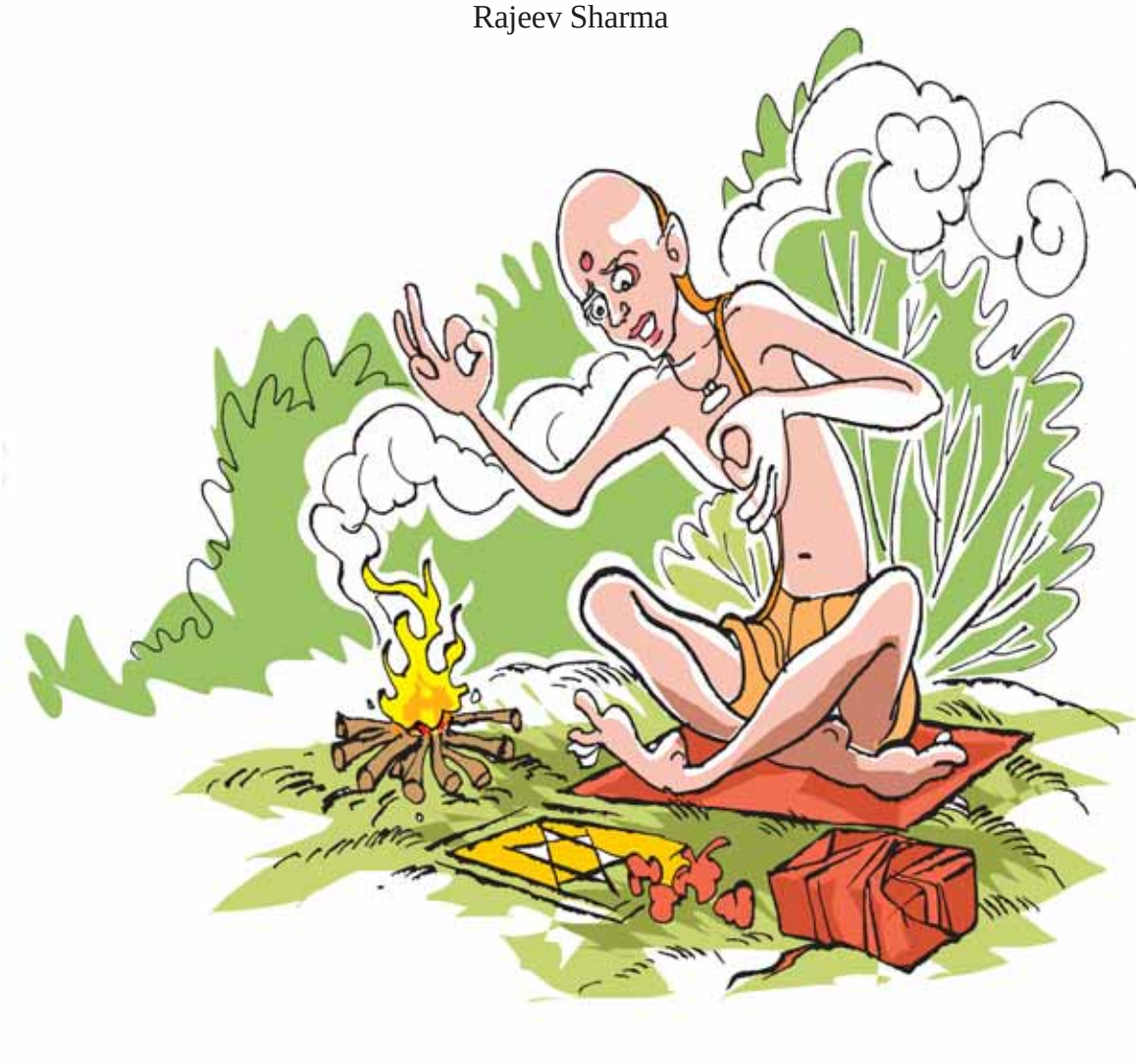

Once upon a time, there was a scholar. He was very wise and well educated. But he was not satisfied with his achievements. He wanted to rule over all human beings. So, he shifted himself to learn about the art of necromancy i.e. '*to rule with the help of the souls of the dead*.' He went into a dense forest and made a circle around him. He drew all pictures of planets and demons.

Then, he started reciting the mantras. After few days, the devil spirit

appeared. He was happy with the scholar' prayer and devotion. The devil gave super human powers to him provided he would sign a bond, and that was signed by him. According to the bond, the power will remain with the scholar for twenty years, after that the demon will take his soul forever.

After acquiring powers, the scholar started helping the poor and needy people. Whenever someone fell in any trouble, he would solve their problems. He gave food to the hungry people. He treated the ill and sick people and saved their lives. He defeated the kings and barons, who were harassing the poor and helpless people. In this way, he used his spiritual and super human powers.

Twenty years swiftly passes by, so according to the bond, about seven devils appeared in front of him to take his soul into the hell. But as the people came to know about the mystery, a huge crowd gathered around him to save his life. They said to the devils that before taking the soul of such a kind and merciful person, they would have to take their souls first. There was a great argument between the two parties. At last, the devils had to leave the place and the life of the learned scholar was saved.

PMR International School
Amb, Una (Himachal Pradesh)

खेल-तमाशा विज्ञान

ख़ुद नापो टीले की ऊंचाई

आइवर यूशिएल

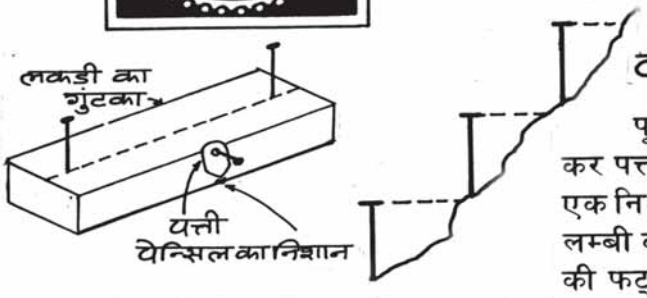

० तमाशे के लिये ज़रूरी सामान :

लकड़ी का एक गुटका जिसका आकार लगभग 25 x 5 x 5 सेमी. हो, कीलें—तीन बड़ी व एक छोटी, टीन की एक पत्ती, हथौड़ी व पेन्सिल, डेढ़ मीटर लम्बी लकड़ी की एक फट्टी।

० तमाशे की तैयारी :

लकड़ी के गुटके पर लम्बाई वाली साइड के समानान्तर ठीक बीचों बीच पेन्सिल से एक रेखा खींच डालो और फिर इस रेखा पर ही चौड़ाई वाले दोनों किनारों के पास एक-एक बड़ी कीलें ठोंक दो।

अब टीन की पत्ती के एक सिरे को काटकर बना लो नुकीला और इसके दूसरे सिरे के ठीक बीचों-बीच एक छेद करके छोटी वाली कील की सहायता से इस नुकीली पत्ती को गुटके की लम्बाई वाली एक साइड पर लटका दो। ध्यान रहे कि इस कील को तुम्हें पूरा नहीं ठोंकना है और पत्ती पर किया गया छेद भी इतना बड़ा रखना है ताकि पत्ती झूलती रहे।

पूरी तरह क्षैतिज अवस्था में रख कर पत्ती की नोंक के ठीक नीचे गुटके पर एक निशान भी लगा डालो और फिर एक लम्बी कील के सहारे इस गुटके को लकड़ी की फट्टी पर ठोंक दो और समझलो कि तुम्हारा टीले की ऊंचाई नापने वाला यंत्र बन गया।

० अब देखो तमाशा :

तमाशा देखने के लिये क्या करना है इसके लिये चित्र की सहायता लो। सबसे पहले टीले से नीचे खड़े होकर दोनों कीलों को एक सीधी रेखा में लेते हुए तुम इसके ठीक सामने टीले पर के किसी बिन्दु को देखो और अपने किसी साथी से वहां निशान लगवा दो। अब खुद वहां पहुंचकर खड़े हो जाओ और पहले वाली क्रिया दोहराकर दूसरा निशान लगवाओ उस जगह पहुंचने के लिये। बस एक बात का ध्यान रखना कि कीलों पर निगाह जमाते समय तुम्हारी पत्ती की नोंक तुम्हारे द्वारा लगाये गये पेन्सिल के निशान पर ही होनी चाहिए।

अंत में, जितनी बार तुमने जगह बदली है उसमें डेढ़ का गुणा कर , तुम टीले की ऊंचाई मीटर में प्राप्त कर सकते हो।

Book Review

Two Interesting Books for Children

The Hare in the Moon

Early man was overawed by the forces of nature and by the strangeness of natural phenomena. Unable to properly explain why a certain thing happened, he invented stories to explain it. In time, he had invented a story for everything – lightening and thunder, forests, the sun, the moon and the Milky Way, birds and beasts. The themes were simple, and so were the characters – simple men and women, or humanised animals.

The Hare in the Moon – Tales of How and Why is a collection of such stories that, in their own way, explain the mysterious aspects of nature. They not only entertain but also instruct.

Cover design and illustrations by Agantuk are very impressive.

The Hare in the Moon
Tales of How and Why
Pratibha Nath
Ponytale Books
Rs 90/- pp 98

Tara's Project

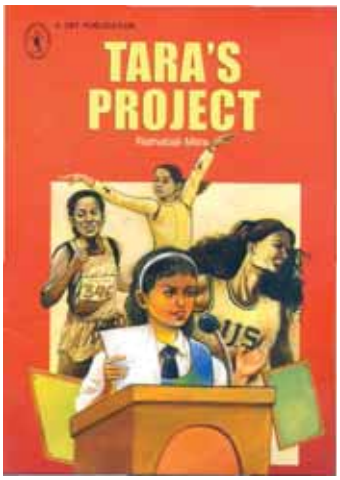

While surfing the internet with her sister, Disha, at their cousin Prashant's house, 12-year-old Tara decides to make a project on the Women Olympians.

Much to her surprise, Tara learns that the status and privilege women enjoy in various sports today is the result of the tireless effort and tremendous struggle some of them faced before being allowed to make an appearance in 1990.

The book beautifully illustrates the indomitable spirit of some of these women who have made a mark in the greatest sporting event.

Tara's Project
Ratnabali Mitra
Children's Book Trust
Rs 35/- pp 40